भगत कबीर – सबद १

जननी जानत सुत बडा होत है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटत है ॥

राग सिरिराग, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ९१

जननी जानत सुत बडा होत है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटत है ॥
मोर मोर कर अधिक लाड धर पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥
ऐसा तैं जग भरम लाइआ ॥
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥
कहत कबीर छोड बिखिआ रस इत संगत निहचउ मरणा ॥
रमईआ जपह प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिध भव सागर तरणा ॥२॥
जां तिस भावै ता लागै भाउ ॥
भरम भुलावा विचहु जाइ ॥
उपजै सहज गिआन मत जागै ॥
गुर प्रसाद अंतर लिव लागै ॥३॥
इत संगत नाही मरणा ॥
हुकम पछाण ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥

सार: प्रकृति के नियम के अनुसार, दुनिया का हर हिस्सा अपने प्राकृतिक अस्तित्व को पूरा करने का प्रयास करता है, जैसे कोई कली खिलती है या बीज अंकुरित होता है। परिणामों से असंतोष जो स्वाभाविक है, डर पैदा कर सकता है और लोगों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोक सकता है। यह सिद्धांत जीवन के हर पहलु पर लागू होता है जैसे व्यक्तिगत संबंध, भौतिक संपत्ति, समुदाय और आस्था। दुनयावी मोह से आगे बढ़कर हम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गहरे उद्देश्य और संतोष को विकसित कर सकते हैं।

जननी जानत सुत बडा होत है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटत है ॥
माँ को यह लगता है कि उसका बच्चा हर दिन बढ़ रहा है; वह यह नहीं समझती कि हर दिन उसके जीवन में कमी हो रही है। यह मृत्यु के प्रति अज्ञानता को दर्शाता है।

मोर मोर कर अधिक लाड धर पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥
मोह में डूबी माँ अपने बच्चे को "मेरा, मेरा" कहती है और मृत्यु की सच्चाई को नज़रअंदाज करती है। इस रूपक में मृत्यु का देवता उसकी इस अज्ञानता पर हंसता है। (१)

ऐसा तैं जग भरम लाइआ ॥
मोह ने आपको और संसार को भ्रम में डाल दिया है और इस भ्रम में सब भटक रहे हैं।

कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥
जब मन मोह-माया में फंसा हो तब सच्चाई को कैसे समझ सकता है? (१)(विराम)

कहत कबीर छोड बिखिआ रस इत संगत निहचउ मरणा ॥
कबीर कहते हैं माया के झूठे सुखों का त्याग कर दो नहीं तो यह मोह, चेतना के अंत का कारण बनेगा।

रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिध भव सागर तरणा ॥२॥
सर्वव्यापकता का ध्यान करो। इस साधना से प्राणी जीवन की अनंतता को समझ कर इस माया-मोह रूपी संसार के भय को पार कर सकते हैं जैसे कोई भयानक सागर को पार करता है। (२)

जां तिस भावै ता लागै भाउ ॥
जब कोई कुछ करने के लिए इच्छुक होते हैं, तो वे भक्ति के साथ खुद को समर्पित करते हैं।

भरम भुलावा विचहु जाइ ॥
तब उनके भीतर से सभी भ्रम और अज्ञान दूर हो जाते हैं।

उपजै सहज गिआन मत जागै ॥
उनके भीतर सहज ज्ञान उत्पन्न होता है और विवेक जागृत हो जाता है।

गुर प्रसाद अंतर लिव लागै ॥३॥
विवेक की कृपा से व्यक्ति आत्मचिंतन और ध्यान में डूब जाता है। (३)

इत संगत नाही मरणा ॥
ऐसी संगति से आध्यात्मिक चेतना का कभी पतन नहीं होता।

हुकम पछाण ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥
प्रकृति के नियमों की गहराई को समझकर, व्यक्ति अपने भीतर बसे सर्वव्यापक साथी से मिल सकता है। (१)(विराम दूसरा)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि ज्ञान के शब्दों पर विचार करना, आत्म-चिंतन में लीन होना और जाग्रत आत्माओं से जुड़ना, आध्यात्मिक पतन को रोकने में सहायक होता है। प्रकृति के नियम जो मोह को छोड़ने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, उनको समझकर हम अपने सच्चे स्वरुप और भीतर स्थित चेतना से जुड़ सकते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com